नवंबर 2012 खंड 5, अंक 6

श्री राम चन्द्र मिशन®

India ECHOES ONE WORLD ONE HUMANITY

गुरुदेव की रिपोर्ट

15 अगस्त को सामान्य सभा के पश्चात गुरुदेव काफी निश्चिन्त दिखाई दे रहे थे लेकिन हमेशा की तरह सक्रिय थे। 16 की सुबह को उन्होंने कॉटेज में उपस्थित सभी अभ्यासियों से यह सुनिश्चित करने के लिये कहा कि उन्होंने गोल्डन बुक में हस्ताक्षर कर दिये हैं। उन्होंने अपने आस–पास उपस्थित अभ्यासियों को प्यार से डाँटते हुए सम्बन्धित कार्यकर्ताओं को हस्ताक्षर कराने के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए कॉटेज में बुलाया। यह– छोटी से छोटी प्रक्रिया को भी पूर्णता के साथ करना – गुरुदेव की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुरुदेव का स्वास्थ्य अभी तक संतोषजनक नहीं होने के कारण उन्होंने एक अत्यन्त ही साधारण नित्यक्रम अपनाया हुआ है। गुरुदेव सुबह को व्यायाम प्रशिक्षक, जो कि प्रतिदिन आते हैं, के साथ कार्य करते हैं। शारीरिक व्यायाम के पश्चात सामान्यत: वे कुछ देर आराम करते हैं। वे अपना नित्यक्रम ज़ारी रखने की कोशिश करते हैं जिसके अंतर्गत नाश्ता करते हुए अपने लिए समाचार पढ़वाते हैं। उसके पश्चात वे अपना समय ई–मेल पढ़ने और कार्य करने में व्यतीत करते हैं।सायंकाल में शारीरिक व्यायाम का एक और सत्र होता है और कभी–कभी वे कुछ दूर तक चलते हैं और फिर अपनी व्हील–चेयर में बैठ कर कुछ दूर तक चक्कर लगाते हैं या फिर बाहर बैठ जाते हैं और अभ्यासी उनके चारों ओर बैठ जाते हैं। आरम्भिक दिनों में उन्होंने चलने के लिए एक वॉकर की सहायता ली लेकिन बाद में उन्होंने अपनी छड़ी को इस्तेमाल करने की कोशिश की और कुछ दूर तक चले। ये सभी बातें गुरुदेव के धीमे किन्तु स्थिर स्वास्थ्य सुधार को दर्शाती हैं।

एक बार गुरुदेव व्हिस्पर्स का संदेश सुन रहे थे जिसमें हम सभी अभ्यासियों के बीच एकता पर बल दिया गया है। गुरुदेव भी सत्संग के दौरान एकता और भाईचारा बनाये रखने की आवश्यकता पर बल देते रहे हैं।

20 और 21 अगस्त को गुरुदेव का विशेष स्वास्थ्य परीक्षण और इलाज़ हुआ जिसके परिणाम काफी सकारात्मक थे।

एक दोपहर को गुरुदेव को अचानक एक सिनेमा के बारे में याद आया जिसे उन्होंने कई साल पहले देखा था। यह उन दो सिनेमाओं में से एक था जिन्हें उन्होंने यूरोप के सिनेमाघर ने देखा था। यह सिनेमा उन्होंने पेरिस में उस दिन देखा था जब उन्होंने सोरबोन विश्वविद्यालय में सहज मार्ग के बारे में एक प्रस्तुति दी थी। इस सिनेमा का नाम था, "मनिका: वह लड़की जिसने दो बार जीवन जिया", यह कहानी पुनर्जन्म के विषय में थी। गुरुदेव इस सिनेमा को देखते हुए उसमें पूरी तरह मग्न हो गए थे।

रविवार 26 अगस्त को सुबह 11 बजे गुरुदेव 45 मिनट के लिये आश्रम में चारों ओर घूमने के लिये गये। उन्होंने कहा "मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कि मुझे कहीं पर बंद कर दिया गया था और अब मैं बाहर आ गया हूँ"। उन्होंने कैन्टीन तथा रसोई का दौरा किया और पुस्तकालय भवन के नीचे तहखाने में व्यायाम करने की मशीनों को देखने के लिये गये। वे भाई जैकी से भवन पुनरुद्धार कार्य की प्रगति के विषय में बात करने के लिये ध्यान कक्ष में गये। कॉटेज के बरामदे में कुछ देर आराम करने के बाद गुरुदेव ने दोपहर का खाना भोजन कक्ष में खाने का निश्चय किया जहाँ उन्होंने पिछले चार महीने से भोजन नहीं किया था।

एक दिन शारीरिक व्यायाम का सत्र समाप्त होने के पश्चात गुरुदेव डॉक्टरों से भाषाओं के विषय में बात कर रहे थे और उन्होंने कहा "मैने यह पहले भी कहा है कि इन्सान के दिल का रास्ता उसके पेट से होकर नही बल्कि उसकी जीभ से होकर जाता है। यदि हम सामने वाले व्यक्ति की भाषा के कुछ शब्द भी जानते हैं और उसी भाषा में बात करते हैं तो यह उसके दिल को छूता है"। गुरुदेव अरबी भाषा में कुछ वाक्य बोल रहे थे जिसने उपस्थित सभी व्यक्तियों को आश्चर्यचकित कर दिया।

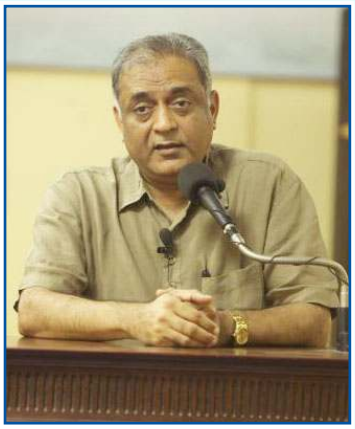

व्यायाम सत्र के पश्चात वे काफी थके हुए थे और उन्होंने कहा, "यदि कोई मुझसे एक कदम भी चलने के लिए कहेगा तो मैं सोने चला जाऊँगा"।

29 अगस्त, बुधवार को गुरुदेव के हृदय तन्त्र का परीक्षण 24 घन्टे के लिये शुरु किया गया और उनकी छाती पर मॉनीटर लगाए गए।

उन्हें अपनी सामान्य गतिविधियाँ ज़ारी रखने के लिए कहा गया और इसलिए उन्होंने अपनी पहियेदार कुर्सी पर बैठकर एक चक्कर लगाने का निश्चय किया। किन्तु बूँदा–बाँदी शुरु होने के कारण वे वापस लौट आए और बरामदे के पास बैठ गए। गुरुदेव ने वामन अवतार और शुक्राचार्य की कथा और किस तरह उस घटना में शुक्राचार्य ने अपनी आँख खो दी थी, को याद किया। गुरुदेब ने अपने सामने बैठे हुए लोगों की हँसी उड़ाते हुए कहा कि वे सब कम्प्यूटर–विशेषज्ञ हैं किन्तु भूतकाल की इन सब कहानियों के बारे में नहीं जानते।

बहन आला और भाई इगोर ने सतखोल के बारे में 'सतखोल का सुनहरा मौन' नामक डीवीडी वृत्तचित्र बनाया और उन्होंने उसे गुरुदेव को अर्पित किया जिन्होंने उसे देखने की अपनी रुचि व्यक्त की। जब गुरुदेव उसे बड़े ध्यान से देख रहे थे तो माहौल पूरी तरह बदल गया जैसे कि हर कोई सतखोल पहुँचा दिया गया हो।

मंगलवार, 11 सितम्बर, का दिन 'गायत्री' का प्रारम्भिक निर्माण के बाद 50 वाँ वर्ष था और गुरुदेव ने कहा कि उन्होंने एक समारोह की योजना बनाई थी किन्तु उनके स्वास्थ्य की वजह से यह संभव नहीं हो सका। बातचीत में गुरुदेव ने कहा कि, "पत्नी के मुख्य लक्षण ये हैं कि वह प्रेममयी हो, उसे खाना बनाना आता हो और उसमें बच्चों की भलीभाँति देखभाल करने की योग्यता हो। आजकल हम सुंदर पत्नी इत्यादि चाहते हैं और फिर हम ईर्ष्यालु होते हैं कि दूसरे लोग उसकी ओर देख रहे हैं।"

एक अभ्यासी ने गुरुदेव से पूछा, "आप अभ्यासियों से मिलने और आराम करने की अपनी ज़रूरत में किस प्रकार संतुलन बनाए रखते हैं?" गुरुदेव ने कहा, "मैं अपने काम से प्रेम करता हूँ और जहाँ प्रेम है वहाँ कोई सीमा नहीं होती।"

तत्पश्चात् गुरुदेव ने 'कान्हा' परियोजना दल के साथ बातचीत की और आगामी 30 अप्रैल 2013 के उत्सव के लिए 'कान्हा' स्थल तैयार करने हेतु कई सुझाव दिए।

फिर गुरुदेव ध्यान केन्द्र में हो रहे काम का निरीक्षण करने वहां गए और वापस आते हुए डार्म 'ए' में भाई राघवन की विशाखापट्टनम से आए अभ्यासियों को दी जा रही वार्ता को सुनने के लिए रुके। फिर गुरुदेव ने 15 मिनट की एक छोटी सिटिंग दी और वापस कॉटेज आए।

गुरुदेव ने भाई माधव रेड्डी के घर रुकने का निश्चय किया ताकि कॉटेज निर्माण कार्य किया जा सके। उनका भाई माधव के घर में वास, मुख्यतः आराम करने के लिए और और पुनः स्वस्थ होने के लिए था लेकिन फिर भी उन्हें मिलने के लिए आने वालों का सतत् प्रवाह बना हुआ है। गुरुदेव अभ्यासियों से मिलने की पूरी कोशिश कर रहे हैं लेकिन यह ज़रूरी है कि हम उनके आराम की जरूरत को समझें ताकि वे जल्दी स्वस्थ हो सकें।

एक शाम को गुरुदेव चलने की छड़ी के सहारे अपने शयन–कक्ष से चले जिससे उनके स्वास्थ्य में सुधार का संकेत मिला। गुरुदेव थोड़ी देर के लिए बाहर बैठे और फिर अपनी पहियेदार कुर्सी को ख़ुद चलाते हुए अन्दर गए। दर्द, कष्ट और किस प्रकार हरेक को दर्द को खुशी से

स्वीकार करना चाहिए क्योंकि यह हमारी प्रगति और विकास के लिए अच्छा है; इत्यादि के बारे में बात करते हुए वे अच्छे मिजाज़ में नज़र आए। गुरुदेव ने कहा कि अगली परेशानी का सामना करने और उसे जीतने के लिए वे छड़ी के बल चल रहे थे।

शनिवार, 22 सितंबर, की सुबह गुरुदेव की दन्त–चिकित्सा की गई और सुबह करीब 11:30 बजे वे डार्म ए गए। वे तटीय आन्ध्र–प्रदेश से आए अभ्यासियों से मिले और उन्होंने समय बरबाद न करने के महत्त्व को समझाते हुए एक लघु वार्ता दी और फिर कहा कि वे एक छोटी सिटिंग देंगे। गुरुदेव ने अपनी वार्ता में 'उपलब्ध समय का सदुपयोग करते हुए विकास करने की अति शीघ्रता' की आवश्यक्ता का जिक्र किया। उन्होंने हरेक को यह याद रखने के लिए प्रेरित किया कि "बरबाद किए हुए समय को वापस नहीं लाया जा सकता।"

ऐसे क्षण भी आते हैं जब गुरुदेव छड़ी के सहारे चलकर बाहर कक्ष तक आते हैं और अभ्यासी उन्हें चारों ओर से घेर कर बैठ जाते हैं। एक ऐसे ही अवसर पर बहुत सारे अभ्यासी आए और उनके चारों ओर बैठ गए। गुरुदेव बहुत थके हुए और कमजोर लग रहे थे लेकिन उन्होंने बिना बताए ही पूजा देना शुरु कर दिया। करीब पंद्रह मिनिट के बाद वे बोले "दट्स ऑल"। गुरुदेव फिर तुर्की से आए एक अभ्यासी जोड़े की बातें सुन रहे थे जो तुर्की में मिशन के बारे में बहुत अच्छी खबर लेकर आए थे जिससे गुरुदेव खुश हो हुए।

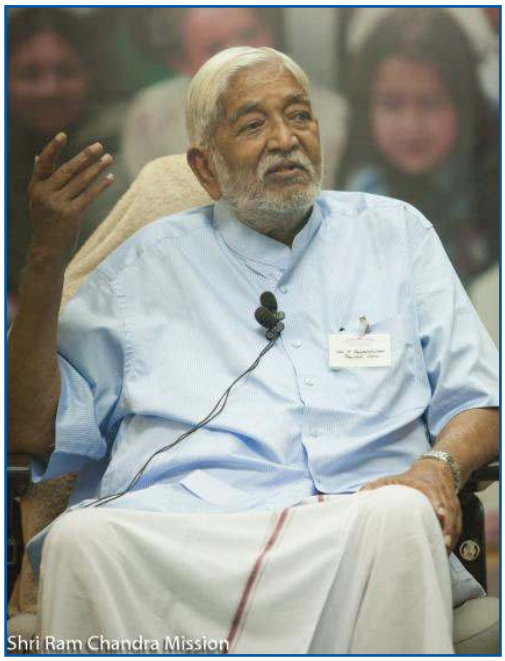

एक रविवार की सुबह भाई माधव के घर गुरुदेव ने उसी समय सिटिंग दी जब आश्रम में सिटिंग चल रही थी। बाद मे जब भाई कमलेश ने गुरुदेव से कहा कि सत्संग के मध्य के दौरान एक अलग ही स्तर की लयवस्था महसूस हुई। गुरुदेव ने कहा कि वह जब सिटिंग दे रहे थे तो सिटिंग के करीब बीच में उन्होंने हर एक को इसमें शामिल कर लिया था और आपका अनुभव इसी की प्रभाव था।

शुक्रवार 28 सितंबर भाई कमलेश का जन्म–दिन था और सुबेरे गुरुदेव ने भोग चढ़ाया और सबको दिया। शाम को कोलकता के सारे अभ्यासी भाई माधव के घर के बाहर इकट्ठे हुए और गुरुदेव कुछ देर के लिए बाहर आकर बैठे। सारे इकत्रित अभ्यासियों को गुरुदेव से मिलने के बाद एक प्रकार कि तृप्ति महसूस हुई।

'चीन सेमिनार' के शुरुआत में सेमिनार के आयोजकों की गुरुदेव के साथ मीटिंग हुई जिसमे साप्ताहिक कार्यक्रम के बारे में बात–चीत हुई। चीन और दूर–पूर्व देशों से करीब सत्तर अभ्यासी सेमिनार में भाग लेने आये थे। 2 अक्तूबर, मंगलवार, को गुरुदेव डॉर्म ए पहुँचे तथा चीन सेमिनार के सहभागियों से मिले, एक सिटिंग दी और बाद मे एक वार्ता भी दी। वार्ता में उन्होंने कहा "मै कॉलेज में पढ़ाई के दिनों से ही चीनी सभ्यता और सिद्धांतों से आकर्षित रहा हूँ। मैने कैसे भी करके 'ताओ ले चिंग' और 'कन्फ्यूसियस के सूक्तिसंग्रह' के लेख प्राप्त कर लिए थे। एक चीज जिसने मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित किया, वह थी – "आई चिंग– बदलाव की किताब"। उन्होंने यह बताते हुए दुबारा चीन जाने कि इच्छा ज़ाहिर की कि "मैं आपके देश गया हूँ पर सिर्फ एक या दो जगह देखी हैं। अगर मुझे मेरे गुरुदेव से अनुमति मिली तो मैं फिर आऊँगा, पर बेशक अगर सिर्फ आप लोग चाहे कि मैं आऊँ तो। गुरुदेव ने बताया कि चीन और भारतीय लोगों के बीच में बाँटने के लिए पुरानी सभ्यता, सिद्धांत और ऐतिहासिक घटनाएं हैं। उन्होंने कहा "आपको बार–बार यहाँ आना चाहिए इस बूढ़े से मिलने के लिए, जो चीनी भाषा नहीं जानता है। पर मेरे गुरुदेव का शुक्रिया कि मैं स्वस्थ हूँ, आप सब से मिलने के लिए, कुछ काम करने के लिए और आप सबको अक्तूबर 2013 के सेमिनार का निमंत्रण देने के लिए।

एक दिन शाम को रूस की दो बहनें गुरुदेव से विदा लेने के लिए आईं और कहा कि कोई संदेश दें। गुरुदेव ने कहा "देखिये, दुनिया को बदलना हमारा काम नहीं है। वह लौकिक काम है। पर हम एक एक करके, एक और को मिशन में लाकर मदद ज़रूर कर सकतें है। आप देखिये, स्वच्छ दिल, प्यार–भरा ह्रदय और धीरे–धीरे सब बदलता है"। आप तालाब में पत्थर फेंकते हैं तो लहरें उठती हैं। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारा काम छोटा है या बड़ा। हमें सिर्फ करना है। मैं बाबूजी महाराज से कितनी ही बार पूछता था कि बाबूजी हम इतना कर रहें है, क्या उसका परिणाम आयेगा? और बाबूजी कहते थे – यह सवाल कभी मत पूछो। तो हमें परिणाम के बारे में नहीं सोचना चाहिए। सिर्फ करें और भरोसा रखें कि परिणाम निकलेगा।

सितंबर 4–9, 2012

अलाहाबाद केंद्र से करीब 630 अभ्यासी सेमिनार में शामिल होने के लिए पधारे। नियमित सत्संग, मीटिंग और कार्यक्रमों के अलावा अभ्यासियों को कुछ अवसरों पर गुरुदेव से मिलने का मौका भी मिला। एक दो दिन, सभी अभ्यासी कुटीर के बाहर बड़ी ही शिष्टता से इकठ्ठे हुए और शाम के समय गुरुदेव व्हील–चेयर पर बाहर आए और सारे अभ्यासियों से मिले। पूर्ण तरह से मौन रखा गया और गुरुदेव 10–15 मिनट अभ्यासियों के साथ बैठे रहें।

सितंबर 11–16, 2012

विशाखापट्टनम और दाचेपल्लि से करीब 530 अभ्यासी इस हफ्ते मिलने पधारे। गुरुदेव डॉर्म ए में उनसे मिलने गए और सेमिनार के तहद एक छोटी वार्ता प्रस्तुत की।

सितंबर 18–23, 2012

तटवर्ती आंध्र प्रदेश के सेमिनार में पूर्व और पश्चिमि गोदावरी और काकिनाडा केंद्र के अभ्यासी भी मौजूद थे। करीब 430 अभ्यासी आए हुए थे। 22 तारीक को गुरुदेव सभी अभ्यासियों से मिले, एक सिटिंग और वार्ता दी। हर दिन वार्ताएं हुई, नियमित सत्संग के अलावा अभ्यासियों ने सब कार्यक्रमों मे भाग लिया।

सितंबर 25–30, 2012

कोलकाता और पश्चिम बंगाल के बाकी केंद्र और सिक्किम और त्रिपुरा के केंद्रों से भी सभी अभ्यासियों ने मिलकर इस सेमिनार में भाग लिया। भाई कमलेश ने बहुत ही सक्रियता से इस सेमिनार और बाकी सेमीनारों में भाग लिया। उन्होंने कई बार वार्ताएं दी, खासकर यह बताते हुए कि गुरुदेव के निकट जाकर उनको परेशान करने के बजाए गुरुदेव की आंतरिक उपस्थिति पर ध्यान दे, आध्यात्मिक स्थिति को बरकरार रखें और आध्यात्मिक तौर पर गुरुदेव हमारे लिए जो कर रहें है उसे आत्मसात करें। हालांकि गुरुदेव ने अभ्यासियों से मिलने कि योजना बनाई थी, पर आश्रम के बाहर सड़क के काम के कारण वे सबसे भाई माधव के घर पर मिले। एक दिन कोलकाता के सारे अभ्यासी उनसे मिलने गए। दूसरे दिन सिक्किम के सारे अभ्यासी गुरुदेव से मिलने गए। इस प्रकार गुरुदेव ने आध्यात्मिक कार्य ही नहीं किया बल्कि सारे अभ्यासियों से भी मिले। कुल मिलाकर 460 अभ्यासियों ने सेमिनार में भाग लिया और आश्रम हर जगह अभ्यासियों से जीवंत हो उठा और सबको एक नई ऊर्जा / स्पूर्ति महसूस हुई।

अक्तूबर 2–7, 2012

चीन और दूर–पूर्व देशों से करीब 70 अभ्यासी दूर दराज से इस समारोह में भाग लेने के लिए आए। गुरुदेव को सेमिनार के अलग–अलग कार्यक्रमों का नियमित रूप से समाचार मिल रहा था और वे आवश्यक तौर पर मार्गदर्शन कर रहे थे।

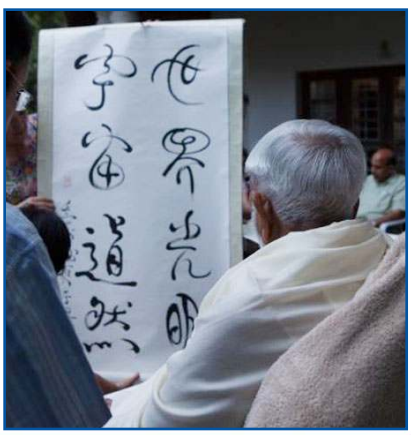

9 से 14 अक्टूबर 2012

चेन्नई आश्रम में लगभग 530 अभ्यासी 'उनकी' छत्र–छाया में दिव्य उपस्थिति के आनन्द से धन्य हुए।

प्रतिदिन तीन ऊर्जायुक्त सत्संग ने सभी को भाव विभोर कर दिया। शान्तिपूर्ण वातावरण, स्वयंसेवकों की स्वामी भक्ति, नेत्र खोल देने वाले भाषण तथा आश्रम में निस्तब्धता कुछ विस्मयकारी थी। प्रत्येक इस बारे में और जानने को उत्सुक था।

मालिक हॉल में पधारे और बोले। उनकी उपस्थिति ने सभी को अचम्भित कर दिया। दूसरा आश्चर्य भाई कमलेश के साथ उनके कार्यालय में व्यतीत किया गया समय था, जहाँ प्रेम प्रवाह था।

एक सप्ताह बहुत कम था किन्तु हमने जो प्राप्त किया वह सदैव अमिट रहेगा। उनके द्वारा दी गई इस दशा को बनाए रखने की जिम्मेदारी अब हमारी है। यह यात्रा और बेहतर नहीं हो सकती थी। अतएव सभी के द्वारा एक स्वास्थ्यवर्धक एवं फलदायक यात्रा का आनन्द लिया गया।

ई–फेसिलिटेटर हेल्प डेस्क, लखनऊ

लखनऊ आश्रम में उन अभ्यासियों के लिए एक ई–फेसिलिटेटर हेल्प डेस्क का शुभारम्भ किया गया जो इंटरनेट के उपयोग से भलीभाँति परिचित नहीं हैं। यह हेल्प डेस्क अभ्यासियों को ई–मेल भेजने के मूलभूत सिद्धान्तों, मिशन की वेबसाइट की खोजबीन, डेली रिफ्लेक्शन, व्हिस्पर्स फ्रॉम द ब्राइटर वर्ल्ड, सहज सन्देश को सब्सक्राइब करना, ऑनलाइन आवेदन–पत्र भरना आदि की सुविधा प्रदान करता है। यह सुविधा अभ्यासियों को अभिनव भाषणों की जानकारी रखने तथा अन्य सभी शीघ्र आदिनांकित प्राप्त ई–मेल को तुरन्त प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है।

मैंगलोर, आश्रम भूमि

मैंगलोर के अभ्यासियों के लिए ध्यान हेतु 12 एकड़ का प्लॉट बंटवाल तालुका में खरीदा गया है जोकि मैंगलोर–बैंगलोर राजमार्ग पर मैंगलोर से 18 कि.मी. दूर स्थित है। यह भूमि केनरा अभियान्त्रिकी महाविद्यालय के सामने राजमार्ग से 5 कि.मी. दूर है। 4 एकड़ भूमि आश्रम के निर्माण में उपयोग में लाई जाएगी तथा 8 एकड़ भूमि अभ्यासियों को आवासीय कॉलोनी के लिए आबंटित की जा चुकी है।

दिनांक 19 सितम्बर 2012 को निर्माण कार्य के शुभारम्भ से पूर्व सत्संग का आयोजन किया गया। मालिक ने अपना आशीर्वाद दिया और भाई कमलेश पटेल ने परामर्श दिया कि सभी अभ्यासियों को मन की स्पष्टता के लिए पूर्व दिवस पर भी ध्यान करना चाहिये। मैंगलोर, पुत्तूर एवं मैसूर के 50 अभ्यासी सत्संग में उपस्थित हुए। मालिक की कृपा से वातावरण ऊर्जामय हो गया। सत्संग के पश्चात "सहज मार्ग के सिद्धान्त भाग–15" में प्रकाशित मालिक का सन्देश भाई प्रसाद कृष्णा द्वारा पढ़ा गया। तत्पश्चात वे बोले और भाई सुब्रया द्वारा किये गए अच्छे कार्य की प्रशंसा की। भाई राधाकृष्णा, भाई अन्नाजी राव, बहन नलिनी भी बोली। बहन वनाजाक्षी ने स्व. भाई सर्नाड द्वारा रचित भजन गाया। सत्संग के तुरंत पश्चात सड़क निर्माण कार्य के लिए योजना का प्रारूप बनाया गया। सत्संग के आयोजनार्थ एक अस्थाई ध्यानकक्ष की शीघ्र स्थापना की जाएगी।

युवा कार्यक्रम

युवा कार्यक्रम, कोलकाता

14 एवं 15 अक्टूबर को बी.एम.ए (बाबूजी मेमोरिअल आश्रम) में लगभग पच्चीस अभ्यासी इकट्ठा हुए। सत्संग एवं नाश्ते के बाद उन्होनें बहन लीना दवे द्वारा प्रस्तुत "अभ्यासी की प्रारम्भिक शिक्षा" के 'प्रार्थना' भाग में हिस्सा लिया। प्रत्येक अभ्यासी ने टिप्पणी की कि उसने प्रार्थना के गहन अर्थ को महसूस किया। शाम को 'सेवा' शीर्षक पर मालिक की दो वार्ताएं चलायी गयी।

15 तारीक को एक अभ्यासी के जीवन में तीन 'म' के महत्व पर छः प्रश्नों का अन्तरावलोकन सत्र आयोजित किया गया। यह केवल स्वः मूल्याँकन का ही सुअवसर नहीं था अपितु एक प्रेरक सत्र भी था जिसमें सच्चाई से अनुभव बताये गये।

दोपहर बाद क्रेस्ट खड़गपुर पर एक चलचित्र दिखाया गया एवं अभ्यासियों को आगामी युवा गोष्ठी में भाग लेने के लिये प्रेरित किया गया। इसके बाद 'सेवा' पर मालिक का एक अन्य वक्तव्य चलाया गया।

दो दिन के आवास में, युवाओं को नियमित समय पर व्यक्तिगत साधना करते हुए अनुशासित जीवन के लिये प्रेरित किया गया। कार्यक्रम का सांय 4.00 बजे सत्संग के साथ समापन हुआ। युवा अभ्यासी दो दिन के लिये आश्रम में रहे। रसोईघर मे काम करने वाले स्वंय सेवक एवं आश्रम प्रबंधक भी आये और अभ्यासियों के इस समूह में एक विशेष संबन्ध विकसित हुआ।

अहमदनगर केन्द्र, महाराष्ट्र

26 अगस्त को एक युवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 18 से 35 साल के आठ अभ्यासियों ने इसमे भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवा अभ्यासियों की प्रतिभागिता द्वारा केन्द्र के विकास को प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम भजन से शुरु हुआ और इसके बाद संस्कारों के प्रभाव पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया गया। 'इच्छुक अभ्यासियों को सहज मार्ग के बारे मे कैसे बताया जाए' और 'भौतिक व आध्यात्मिक जीवन में संतुलन' पर वक्तव्य व चर्चा आयोजित की गयी। समापन के लिये 'यूरोपियन युवा कार्यक्रम' पर एक चलचित्र चलाया गया। सभी अभ्यासियों ने चर्चाओं में उत्साह एवं सक्रियता के साथ भाग लिया। कार्यक्रम परस्पर प्रभावकारी था।

वैश्विक युवा नेट वर्क (तंत्र)

यह पहल सहज मार्ग के युवाओं में एक वैश्विक समुदाय तैयार करने के लिये है। इंटरनेट एक प्राकृतिक शुरुआत थी एवं जबर्दस्त भागीदारी के साथ वेब कार्यक्रम की शुरुआत की गयी जहाँ अभ्यासी एक दूसरे के साथ जुड़ सकें एवं साइबर समूह में हिस्सा ले सकें। यह तंत्र सहज मार्ग प्रस्तावों को कार्यान्वित करने व परियोजनाओं के लिये तेजी से स्वंय सेवकों का बड़ा समूह तैयार करने का एक साधन होगा।

युवा अभ्यासी औसतन या तो अविवाहित हैं या नूतन शादीशुदा हैं। बहुत से अध्यनरत हैं या अपनी जीविका शुरु कर रहे हैं। जीवन इच्छाओं व आकर्षणों के संसार मे घिरा हुआ, गतिशील एवं व्यस्त है; अभ्यास की जिस समय शायद सबसे ज्यादा आवश्यकता है, विडम्बना है कि उसी समय सबसे ज्यादा उपेक्षित है।

प्रथम युवा वेब कार्यक्रम 29 जून को हुआ। भाई बिल वेकॉट ने युवाओं को मिशन में घनिष्ठ रुप से शामिल होने के लिये प्रोत्साहित किया व भाई सन्तोष खांजी ने अभ्यास में अनुशासन की ज़रुरत पर बल दिया।

25 अगस्त को एक समूह दोबारा ऑनलाइन जुड़ा। प्रतिभागी केलिफ़ोर्निया, आस्ट्रेलिया, लेटिन अमेरिका, यूरोप, मिडल ईस्ट एवं भारत से थे। प्रेरणादायक एवं सुन्दर प्रस्तुतियों ने स्थान एवं समय से परे प्रेम का वातावरण बना दिया।

इसके विषय में समाचार एवं आमन्त्रण प्राप्त करने के लिये नीचे दिये गए पते पर पंजीकृत करें:
http://docs.google.com/spreadsheet/viewform?formkey=dE8wRmdCR2txVkNlcXAtTmNCX2d3UHc6MA#gid=0

सहज पिकनिक, भीलवाड़ा, राजस्थान

29 सितम्बर को 22 युवा एवं अभ्यासियों के बच्चे हरिनि महादेव नाम के पिकनिक स्थल पर इकट्ठे हुए। 'सिंह का हृदय' चयनित विषय था, जिसमें नेतृत्व गुणों व निडरता पर चर्चा हुई। एक प्रश्न–उत्तर सत्र का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों के उत्तरों का विषय से सम्बन्धित मालिक के उपाख्यानों/किस्सों से मिलान किया गया। एक खेल जिसमें तीन समूहों को बिना बोले अपनी बात दूसरे को समझानी थी, मजेदार एवं विचारोत्तेजक था। यह पिकनिक सभी अभ्यासियों द्वारा सराही गयी।

एन एस एस शिविर–तिरुप्पुर डायमंड जुबली पार्क

दिनांक 23 से 29 सितंबर तक डी जे पार्क तिरुप्पुर में, एस आर सी एम के द्वारा नंजप्पा कार्पोरेशन स्कूल और के एस सी गवर्नमेन्ट हाई स्कूल के सहयोग से 60 विद्यार्थियों के लिये एन एस एस का शिविर लगाया गया।

दिनांक 23 की शाम को दोनों स्कूलों के संचालकों और अन्य कई स्कूलों से आये अध्यापकों नें उद्घाटन समारोह में भाग लिया। विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं से पधारे अतिथियों और अभ्यासियों के द्वारा सड़क सुरक्षा, प्लास्टिक प्रतिबंधन, डेंगु बुखार, प्राथमिक चिकित्सा पर जागरुकता कार्यक्रम और वृक्षारोपण किया गया। शाम के सत्र में प्रश्नोत्तरी, "विवेकानंद और आध्यात्मिकता" विषय पर वार्ता और "प्रकृति के संरक्षण" पर ज़ोर देने वाला लघु वृत चित्र शामिल था।

दिनांक 29 को पालानीसमी की पंचायत अध्यक्ष ने समापन समारोह की अध्यक्षता की और डी एस पी, दक्षिण तिरुप्पुर, राजाराम ने विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये। दोनों विद्यालयों के विद्यार्थी और अध्यापकगण सात दिनों तक डी जे पार्क में ही ठहरे थे। यह सभी आगंतुकों के लिये हमारे मालिक और सहज मार्ग साधना के बारे में जानने का एक अवसर था।

मदुरई आश्रम में आध्यात्मिक संगोष्ठी

क्षेत्रीय संयोजक भाई एन. प्रकाश एवं क्षेत्रीय प्रभारी भाई टी.वी. विश्वनाथ राव 28 से 30 सितंबर तक तीन दिनों की एक संगोष्ठी आयोजित करने के लिये मदुरई आश्रम गये। मदुरई और निकटवर्ती केन्द्रों के करीब 625 अभ्यासियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम दिनांक 28 को शाम 5.15 बजे सत्संग से प्रारम्भ हुआ। रात्रिभोज और सार्वभौमिक प्रार्थना के बाद 9.15 पर फिर से सत्संग किया गया। भाई प्रकाश ने व्याख्या की कि यह एक गहन आध्यात्मिक संगोष्ठी है और सत्संगों के बीच होने वाले अंतराल में सभी अभ्यासी जितनी बार हो सके ध्यान करें या मिशन की पुस्तकों का अध्ययन करें या मौन रहें, मालिक की कृपा और प्राणाहुति को आत्मसात करें, अपने दिलों की गहराई में जाएं, आत्म विश्लेषण करें और अपने अंदर मालिक की उपस्थिति का एहसास करें।

अभ्यासियों से अनुरोध किया गया कि वे अपनी आंतरिक अवस्था और होने वाले परिवर्तनों को डायरी मे लिखें। सभी अभ्यासियों को डायरी लेखन का महत्व और ध्यान के पूर्व और पश्चात आन्तरिक अवस्था पढ़ने के सुझाव देने के लिये पर्चे वितरित किये गये।

दिनांक 29 को चार सत्संग संचालित हुए और भाई प्रकाश ने प्रत्येक सत्संग के बाद 'व्हिस्पर्स फ्रॉम द ब्राईटर वर्ल्ड' में से सन्देश पढ़े। दिनांक 30 को रविवारीय सत्संग भाई प्रकाश ने सुबह 7.30 और 11.30 पर संचालित किया। सत्संग के बाद भाई राव ने कहा कि यह संगोष्ठी खुद पर काम करने में अभ्यासियों की मदद करेगी। भाई प्रकाश ने कहा कि अभ्यासियों को हमारे मालिक की इच्छानुसार प्रेम, तालमेल एवं शांति का वाहक बनना चाहिये।

तमिलनाडु के दक्षिणी प्रदेश में क्षेत्रीय प्रभारी का दौरा

दिनांक 22 से 26 अगस्त तक भाई टी.वी. विश्वनाथ राव, क्षेत्रीय प्रभारी, दक्षिण तमिलनाडु, ने तिरुनेल्वेली के दक्षिणी ज़िलों और तूतुकुडि का दौरा किया। वे मिशन के छिन्नवल्लिक्कुलम, सिवकासि, कोविल्पट्टी, तूतुकुडि, तिरुनेल्वेली, चेरन्महादेवि, वल्लियूर, कलक्काड्, कोटैकारन्गुलम और अलमारतुपट्टी केन्द्रों पर गये। सालूर और अलमारतुपट्टी में कुछ अभ्यासियों के साथ नये केन्द्रों का उद्घाटन किया गया।

भाई राव ने तूतुकुडि के नेशनल थर्मल पॉवर कार्पोरेशन और होली क्रॉस होम साईंस कॉलेज में खुले सत्रों को सम्बोधित किया। अन्य स्थान समूगरेंगपुरम और मुक्कूडल थे। इस यात्रा के दौरान कई जगहों पर नये आकांक्षियों को प्रारंभिक सिटिंग दी गयी जिसके परिणाम स्वरूप तमिलनाडु के इस हिस्से में मिशन की गतिविधियां जीवंत हो उठी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रकाशन कार्यशाला, मैंगलोर, कर्नाटक

मैंगलोर केंद्र में 58 अभ्यासियों के लिये अपने अनुभव बताने और मिशन के साहित्य को पढ़ने से होने वाले आनंद, इस विषय पर पूरे दिन की कार्यशाला आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में मिशन के साहित्य को पढ़ने के महत्व, इसे क्यों पढ़ना चाहिये और इससे मिलने वाले आध्यात्मिक लाभ और किस भाव से पढ़ना चाहिये तथा अपने आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने में पुस्तकों से मिलने वाले मार्गदर्शन आदि विषयों को शामिल किया गया। प्रस्तुतीकरण के समय पूज्य मालिक द्वारा दी गयीं वार्ताओं की ऑडियो और वीडियो की झलकियां दिखाई गयीं जोकि बहुत ही सूचना पूरक एवं ज्ञानवर्धक थी। सत्र का समापन सत्संग से हुआ।

प्रशिक्षक सेमीनार, केरल

23 सितंबर को उत्तरी मालाबार केन्द्रों के प्रशिक्षक थलासेरी में मिले और केन्द्रों के विकास एवं कार्यात्मक विषयों पर दिनभर चर्चा की। ये निर्णय लिया गया कि पूरे दिन के कार्यक्रम के दौरान निर्धारित विषय से भट्काव नहीं होना चाहिये, सभी अभ्यासियों को स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया जाना चाहिये एवं जहां तक हो सके वार्ता के दौरान मिशन के साहित्य के ही उदाहरण दिये जायें। 23 अक्टूबर को " व्हिस्पर्स फ्रॉम दी ब्राइटर वर्ल्ड" के संदेशों पर आधारित पूरे दिन का कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

प्रकाशन गतिविधियों का विस्तार, मैसूर

1 और 2 सितंबर को मैसूर में जिला स्तर पर प्रकाशन के कार्य से जुड़े हुए स्वयं सेवकों के लिये एक कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें 15 केन्द्रों के 43 अभ्यासियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आरम्भ "साधना – प्रभावी स्वयं सेवा की नींव" विषय पर एक सत्र के साथ हुआ। प्रकाशन से सम्बन्धित कई विषयों जैसे स्वयं सेवक, वस्तुएं, ढांचा, विक्रय एवं वितरण के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी। स्वयंसेवकों द्वारा मिशन के साहित्य को पढ़ने के बारे में ज़ोर दिया गया। हर ज़िले के लिये कार्यक्रम एवं निर्देशों की चर्चा की गयी तथा ज़िला संयोजको ने सभी की जानकारी के लिये योजना को प्रस्तुत किया।

'अवलोकन', बेंगलूरु, कर्नाटक

8 एवं 9 सितंबर को बनशंकरी आश्रम में एक उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम, कन्नड भाषा में, आयोजित किया गया जिसमें लगभग 175 अभ्यासियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अभ्यासियों को आत्म विश्लेषण एवं सहज मार्ग के सूक्ष्म एवं गंभीर पहलुओं को समझने के योग्य बनाना था। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत चुने गये विषय – सहजमार्ग दर्शन, साधना के गंभीर पहलू, सहजमार्ग – एक जीने का तरीका, हमारे विकास में मालिक की भूमिका एवं उनके साथ हमारा रिश्ता, आध्यात्मिक यात्रा में प्रेम की अवस्थायें, उन्नति, आत्म विश्लेषण एवं रुपांतरण आदि थे। एक प्रश्न–उत्तर सत्र एवं मालिक के कथनों की आध्यात्मिक व्याख्या आयोजित की गयी जिसमें सभी अभ्यासी भाग ले सके।

कन्नड़ अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम

कन्नड़ भाषा में अनुवाद के लिये एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 2 भागों में आयोजित किया गया। पहला 17 जून को आयोजित किया गया और दूसरा 5 अगस्त को। इसका उद्देश्य इच्छुक अभ्यासियों को गुरुदेव की वार्ताएं, वीडियो सबटाइटल्स (उपशीर्षक) आदि का अंग्रेजी से कन्नड़ भाषा में अनुवाद के कार्य में प्रशिक्षित करना था जिससे कि अनुवादकों की संख्या बढ़ायी जा सके एवं एक निश्चित समय के अंदर किये जाने वाले अनुवादों की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके। ये कार्यक्रम भाई राम शास्त्री एवं भाई बी.जी सुब्रमनया ने आयोजित किया जिसमें लगभग 17 अभ्यासियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के पहले भाग में प्रशिक्षणार्थीयों को सहज मार्ग के साहित्य के कुछ भाग दिये गये और उनको अनुवाद करने के लिये कहा गया। दूसरे भाग में कुछ अनुवादों को तुलनात्मक अध्ययन के लिये चुना गया। उनकी अच्छाई एवं कमियों के बारे में चर्चा की गयी तथा अनुवाद एवं तिमाही पत्रिका में लेख लिखने के लिये कुछ सुझाव भी दिये गये। ये एक उद्देश्यपूर्ण कार्यक्रम था तथा इसे अभ्यासियों ने अपने लिये काफी लाभकारी पाया।

रास्ते की ओर संकेत

अहमदाबाद, गुजरात

केंद्र प्रभारी भाई जगदीश शेलट ने एक नई शुरुवात के अंतर्गत कॉलेज के विद्यार्थियों को "जीवन के सही लक्ष्य को समझना" नामक विषय पर होने वाली कार्यशाला में भाग लेने के लिये निमंत्रित किया। 7 अगस्त 2012 को 8 विभिन्न संस्थाओं से आये हुए लगभग 67 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आरम्भ एक प्रस्तुतिकरण से हुआ जिसके बाद छात्रों को 5 विषयों पर सामूहिक चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिये कहा गया। कार्यक्रम के समापन के समय सहज–मार्ग साधना में ध्यान की विधि की व्याख्या की गयी और उपस्थित व्यक्तियों में से काफी लोगों ने सहज–मार्ग साधना आरम्भ करने में अपनी दिलचस्पी दिखाई। सम्पूर्ण कार्यक्रम में पूज्य गुरुदेव की कृपा का अनुभव हुआ।

तिरुवनन्तपुरम (त्रिवेंद्रम), केरल

'इन्फोसिस' एवं 'अर्न्स्ट एंड यंग' कम्पनी के ऐच.आर विभाग से निमंत्रण मिलने के बाद इन जगहों पर तीन ओपन हाउस आयोजित किये गये। इन्फोसिस के टेक्नोपार्क परिसर में 9 और 13 अगस्त को एवं अर्न्स्ट एंड यंग के कार्यालय में 6 सितंबर को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दोनो ही कम्पनियों ने 1 हफ्ते पहले ही अपने कर्मचारियों को सूचित कर दिया था। सत्र का आरम्भ "ध्यान कैसे कार्य एवं जीवन में संतुलन ला सकता है, आन्तरिक शान्ति एवं सामंजस्य तथा ध्यान मनुष्य के रुपांतरण को कैसे आगे बढ़ाता है" विषय पर किया गया। बाद में ध्यान के उद्देश्य, हृदय पर ध्यान, मार्गदर्शक की आवश्यकता, मिशन के कार्यकलापों जैसे व्यापक विषयों पर भी चर्चा की गयी। सत्र के दौरान उपस्थित व्यक्तियों ने प्रश्न पूछे तथा सम्पूर्ण सक्रियता और उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लिया।

लामडिंग, असम

1 सितंबर को गुव्हाटी में एक छोटी सी जगह लामडिंग में एक ओपन हाउस आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन, एक ऐसे स्थान पर जहां सहज मार्ग का कोई इतिहास नहीं है, भाई अविजित डे के कठिन परिश्रम से संभव हो सका। उपस्थित 34 उत्साही व्यक्तियों में विद्यार्थी, शिक्षक, अधिवक्ता एवं व्यापारी थे जिनको भाई असोक सेनगुप्ता ने

संबोधित किया एवं "मानव जीवन में ध्यान की भूमिका" नामक विषय पर प्रकाश डाला। चूकिं ज्यादातर भाग लेने वाले बंगाली थे इसलिये कार्यक्रम बंगाली में आयोजित किया गया। ज़ोन–प्रभारी भाई धनिचंद एवं भाई राजू शर्मा भी उपस्थित थे। उपस्थित व्यक्तियों में से 14 व्यक्ति अभ्यासी बने एवं 5 व्यक्तियों की अगले सप्ताह आने की संभावना है।

प्रोदत्तूरु, आंध्र प्रदेश

इंजिनियर्स एसोसिएशन के निमंत्रण पर पहली सितंबर को प्रोदत्तूरु, जिला कडप्पा के पास रायलसीमा थर्मल पावर प्लांट के 150 इंजीनियर्स के लिये एक ओपन हाउस का आयोजन किया गया। भाई टी.बिकशम ने सहज–मार्ग की ध्यान पद्धति और उसकी विषेशताओं पर एक ज्ञानवर्धक वार्ता दी। इस वार्ता ने भाग लेने वालों को बहुत प्राभवित किया तथा 35 व्यक्तियों ने ध्यान आरम्भ किया।

उसी दिन आसपास के केन्द्रों के सभी अभ्यासियों का एक आपसी मिलन कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। यद्यपि प्रोदत्तूरु एक छोटा केन्द्र है फिर भी लगभग 300 अभ्यासी कार्यक्रम के लिए एकत्रित हुए। कार्यक्रम का आयोजन ज़ोन–प्रभारी भाई एम. आर. गंगाधर और भाई टी. बिकशम के किया था।

श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर

श्रीनगर के केन्द्रीय आरक्षित पुलिस बल के परिसर में सी.आर.पी.एफ़ के अधिकारियों की पत्नियों के लिये ओपन हाउस आयोजित किया गया। डी.आई.जी. भाई संदीप दत्ता की पत्नी बहन रजनी दत्ता ने 20 भाग लेने वालों के लिये एक क्रियात्मक गतिविधि का आयोजन किया जिसका उद्देश्य मन और शरीर के सयोंजन का मूल्यांकन करना था। "सुखी परिवार नारी की जिम्मेदारी" नामक विषय पर बहन चंद्रकांता और बहन रजनी दत्ता ने प्रस्तुतिकरण किया।

आंतरिक परिवर्तन की यात्रा मौलिक डर एवं मानव मस्तिष्क की चिंताओं से शुरु होकर शान्ति के आंतरिक समुद्र की ऊँचाईयों पर समाप्त होते हुए प्रदर्शित की गयी। कई लोग अभ्यास शुरु करने के लिये उत्साहित थे। उन्होनें महसूस किया कि उनका व्यव्हार उनके आन्तरिक मूल्यों से उत्पन्न होता है जिसे बच्चे व्यवहारिक आदर्श समझते हैं।

एक एसी ही सभा का आयोजन सी.आर.पी.एफ. की 82वी बटालियन के आधिकरियों एवं जवानों के लिये 2 सितंबर 2012 को श्रीनगर में किया गया।

मैंगलोर, कर्नाटक

14 सितंबर को श्रीनिवास प्रबंधन अध्ययन संस्थान में एक आम सभा का आयोजन किया गया जिसमे एम.बी.ए.के प्रथम एवं अन्तिम वर्ष के छात्रों, बी.एड. के प्रथम वर्ष के छात्रों तथा कर्मचारियों ने लगभग 200 की संख्या में भाग लिया। भाई प्रसाद कृष्णा ने सहज मार्ग पर एक वार्ता दी। प्रधानाचार्य एवं उप–प्रधानाचार्य सहित प्रतिभागियों ने अनेक रुचिपूर्ण प्रश्न किये। अनेक छात्रों ने विवरण पुस्तिकायें लीं तथा कुछ छात्रों ने अभ्यास शुरु करने में रुचि दिखाई।

नेल्लूर, आन्ध्र प्रदेश

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दिवस के अवसर पर 21 सितंबर 2012 को 'मूल्य आधारित आध्यात्मिक शिक्षा' तथा 'ध्यान के महत्व' पर एक 'जागरुकता' कार्यक्रम का आयोजन छात्रों, शिक्षकों एवं प्रशासन के लिये नारायण फार्मेसी कॉलिज, नेल्लूर में किया गया।

मानव मूल्यों पर बोलते हुए बहन उमा गंगाधर ने अपने परिवार के प्रति प्यार एवं स्नेह तथा समाज के प्रति दया, देने की प्रवृत्ति, सहानूभूति आदि के विकास करने की आवश्यकता पर बल दिया। भाई गंगा प्रसाद ने बताया कि ध्यान से कैसे एकाग्रता में सुधार तथा मनुष्य की आध्यत्मिक शक्ति जागृत होती है। भाई वीर भद्र राव एवं चक्का गोपीनाथ (प्राचार्य) ने सत्र का समापन करते हुए मूल्यों के कुछ और बिंदुओं को बताया कि कैसे ध्यान से मानसिक शान्ति मिलती है। यह कार्यक्रम छात्रों एवं शिक्षकों द्वारा बहुत पसन्द किया गया।

बुच्चिरेड्डिपालेम, नेल्लूर, आन्ध्र प्रदेश

30 सितम्बर 2012 को एक पूर्ण दिवसीय आम सभा का आयोजन किया गया। बुच्चिरेड्डिपालेम एवं सिद्धिपुरम केन्द्र के लगभग 96 अभ्यासियों ने हिस्सा लिया। इस आम सभा में 55 अभिलाषियों ने भाग लिया और यह आम सभा सत्संग के बाद शुरु होकर दोपहर तक चली। वक्ताओं ने 'धर्म एवं आध्यात्मिकता', 'आध्यात्मिकता की आवश्यकता' ' गुरु की आवश्यकता' आदि विषयों पर चर्चा की तथा इसके बाद प्रश्नोत्तर काल शुरु हुआ। दोपहर में यह कार्यक्रम प्रतिभागियों के साथ, दस उसूलों के महत्व तथा साधना के मूल तत्वों की चर्चा की ओर केन्द्रित रहा।

खामगाँव, जिला बुलढाना, महाराष्ट्र

सहज मार्ग की खुशबू छिपी हुई थी हालांकि काफी वर्षों पहले यहाँ इसकी शुरुआत हो चुकी थी। इस केन्द्र के कुछ अभ्यसियों ने साथ साथ काम करने तथा मालिक से उनके केन्द्र के विकास में मदद के लिए प्रार्थना की आन्तरिक प्रेरणा महसूस की। शीघ्र ही जहाँ भी वे गये, लोगों ने उनसे ध्यान के आधुनिक जीवन में महत्व तथा सहज मार्ग को जानने मे रुचि दिखाई। फलस्वरूप निकट के केन्द्र के एक प्रशिक्षक को आमन्त्रित किया गया। डेढ़ दिन के संक्षिप्त समय में पाँच आम सभाएं – दो इंजिनियरिंग कॉलेज के स्टाफ के लिये, एक कला और विज्ञान कॉलेज के शिक्षकों के लिये, एक हिन्दुस्तान युनीलिवर कम्पनी के प्रबन्धकों के लिये तथा एक औषधि विक्रेताओं के लिये आयोजित की गयीं। प्रतिभागियों में उत्साह स्पष्ट नज़र आ रहा था। वे उपस्थित प्रशिक्षकों से सम्पर्क कर प्रारम्भिक सिटिंग का समय निश्चित कर रहे थे।

हरुर आश्रम, तमिलनाडु

प्रकाश का केन्द्र

हरुर एक छोटा कस्बा है जो तमिलनाडु के धर्मपुरी ज़िले में स्थित है। यह राज्य मार्गों द्वारा बड़े शहरों जैसे सेलम, धर्मपुरी और तिरुवण्णामलै, से जुड़ा हुआ है। पुराना और रमणीय मोरापुर रेलवे स्टेशन यहाँ से 10 किमी की दूरी पर है।

इस केन्द्र की शुरुआत भाई वी.के. सोमकुमार द्वारा वसावी महल में 25 सितंबर 1995 में किए गए एक ओपन हाउस के माध्यम से हुई। इसमें उपस्थित 150 लोगों में से 15 ने उसी दिन पूजा शुरु की थी। तिरुप्पुर, संकगिरि और धर्मपुरी से प्रशिक्षक अभ्यासियों को पूजा देने के लिए वहाँ आए थे और अक्तुबर 1995 से इस केन्द्र ने कार्य करना शुरु किया था।

हरुर आश्रम तिरुप्पत्तूर मुख्य सड़क पर हरुर से 5 किमी की दूरी पर स्थित है। आश्रम के लिए ज़मीन की खोज 1998 में शुरु हो गई थी तथा 19 अप्रैल 2000 को सोरियाम्पट्टी में 5 एकड़ ज़मीन खरीदी गई और इसका पंजीकरण कराया गया।

17 फरवरी 2001 को गुरुदेव हरुर आश्रम आए, ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया और यहाँ दो दिन तक ठहरे। 3000 अभ्यासी और 500 अभ्यास शुरु करने के इच्छुक गण इसमें उपस्थित थे। गुरुदेव ने अपनी वार्ता मे 'प्रकाश का केन्द्र' के विचार पर गौर फरमाया और कहा कि" यह वास्तव मे ही प्रकाश का केन्द्र होना चाहिए न कि 'अंधेरे का केन्द्र' जैसे कि एक अपेक्षित मंदिर होता है। प्रकाश कब आता है? केवल तब जब आप एक माचिस की तिल्ली लेते हैं और लैम्प की बत्ती को जलातें हैं। तभी यह प्रकाश है अन्यथा यह सिर्फ अंधकार है। अत: यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम आएं और प्रकाश उत्पन्न करें क्योंकि प्रकाश अपने आप नही आता। इसलिए जब हम यहाँ आएं तो स्वच्छ एवं साफ हृदय के साथ आएं। यदि हम शुद्ध हृदय लेकर आतें हैं तो प्रकाश स्वंय बढ़ता रहेगा। यह प्रकाशमय हो जायेगा।

आश्रम में एक सुंदर बगीचा है जिसमें कई वृक्ष हैं जो वातावरण की शान्ति को और बढ़ा देते हैं। ध्यानकक्ष की नाप लगभग 1000 वर्ग फुट है। इसकी छत ए.सी. चादरों से बनी है और इसका निर्माण तीन माह मे दिसम्बर 2000 में हुआ था। इसके अलावा वहाँ 864 वर्ग फुट का शयन कक्ष (डॉर्मटॉरी) , प्रचुर संख्या में शौचालय एवं स्नानागार हैं। मालिक की कॉटेज के साथ ही आश्रम में बड़ा रसोईघर, भोजन परोसने का स्थान तथा शीतल और मनोहर घास की छत वाला भोजन करने का स्थान है।

16 अगस्त 2007 को मालिक इस आश्रम में दूसरी बार आए और सत्संग करवाया। मालिक ने हरुर आश्रम के स्थाई ध्यान कक्ष के निर्माण की अनुमति प्रदान कर दी है।

आश्रम से जुड़े हुए 7 एकड़ के क्षेत्र में श्री चारीजी नगर नाम की आवासीय कालोनी बनाई गई थी। मालिक द्वारा अभ्यासियों को कुल 90 आवासीय प्लॉट वितरित किये गये। कालोनी में जल वितरण के लिये 30,000 लीटर क्षमता की पानी की टंकी बनाई गई है।

मालिक के प्रवास के पश्चात, ऊत्तन्गरै, सिंगारपेटै, कम्बैनेल्लूर, बोम्मिडि, पाप्पिरेड्डिप्पट्टी, मोरप्पूर और कोटप्पट्टी जैसे कई उपकेन्द्र बने। हरुर और उसके उपकेन्द्रों में कुल मिलाकर लगभग 400 अभ्यासी सहज मार्ग पद्धति से साधना कर रहे हैं। सत्संग के अलावा इस केन्द्र में सहज मार्ग के मालिकों के जन्मदिन, प्रशिक्षकों की बैठक और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

घोषणाएँ

नई नियुक्तियाँ

डॉ. सत्य एन. मंडल
ज़ोन प्रभारी, दिल्ली (एन.सी.आर.) क्षेत्र

उपेन्द्र पॉल धवन आई.आर.एस. (सेवा निवृत)
डायरेक्टर, क्रेस्ट– खड़गपुर

बहन रूपाली गर्ग
असिस्टंट डायरेक्टर, क्रेस्ट– खड़गपुर

सी. एस. रामचंद्र मूर्ति
रखरखाव प्रबंधक, क्रेस्ट– खड़गपुर

जगदीश शरण गुप्ता
प्रबंधक, लखनऊ आश्रम

उल्हास राव कुंबले
केन्द्र प्रभारी, हैदराबाद केन्द्र

श्यामजी मेहरोत्रा
केन्द्र प्रभारी, लखनऊ केन्द्र

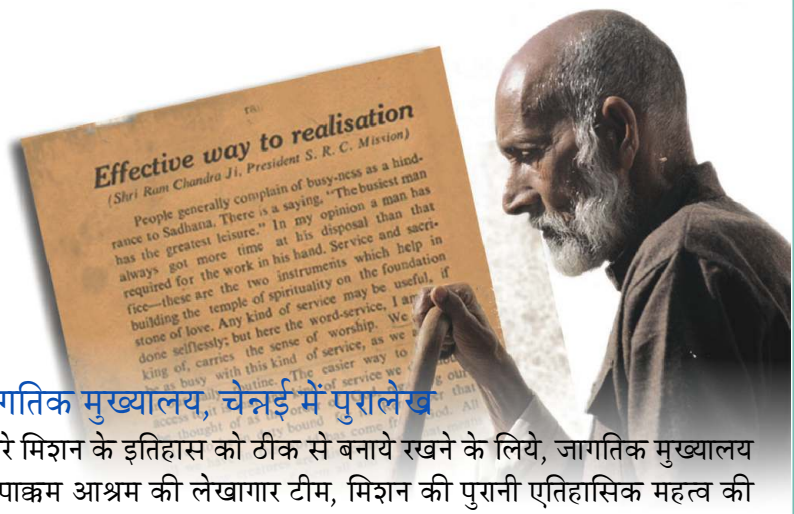

जागतिक मुख्यालय, चेन्नई में पुरालेख

हमारे मिशन के इतिहास को ठीक से बनाये रखने के लिये, जागतिक मुख्यालय मणपाक्कम आश्रम की लेखागार टीम, मिशन की पुरानी एतिहासिक महत्व की कलाकृतियों को इकट्ठा एवं संरक्षित कर रही हैं। यदि आप के पास संयोगवश ऐसी कोई वस्तु हो (जैसे फोटो, ऑडियो, वीडियो, किसी भी माध्यम में एवं फॉर्मेट में हो, पुरानी पुस्तकें, पत्रिकाएं या कोई वस्तु जिसका कभी सहज मार्ग के किसी मालिक ने उपयोग किया हो) तो कृपया उन्हें संग्रहित करने के लिये योगदान पर विचार करें ताकि वे भावी पीढ़ी के लिये संग्रहित की जा सकें। लेखागार टीम को इस पते पर ई–मेल किया जा सकता है whq.archives@srcm.org

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2011 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.